संख्या-734/2017/1313/22-2-2017-17(439)/2017

प्रेषक,

सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर,
संयुक्त सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

महानिरीक्षक,
कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवायें,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

कारागार प्रशासन एवं सुधार अनुभाग-2 **लखनऊ दिनांक 30 अगस्त, 2017**

विषयः- केन्द्रीय कारागार, वाराणसी में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी हकीम रईस अली पुत्र मो0 मीरन, निवासी जनपद-लखनऊ की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक अपने पत्र संख्या-16050-185/प्रोबेशन-3 (एम-02.05.2017) दिनांक-18.05.2017 का कृपया संदर्भ ग्रहण करें।

2- आपके उक्त पत्र दिनांक 18.05.2017 द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रस्तावानुसार बन्दी हकीम रईस अली पुत्र मो0 मीरन, ग्राम व थाना-कैसरबाग, जनपद-लखनऊ का निवासी है। बन्दी ने आपसी विवाद में दिनांक 19.07.1978 को सुबह लगभग 07.00 बजे पत्नी आशमा बेगम, पुत्र यासीन व सईद सहित 03 लोगों की चाकू मारकर हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-983/1998 के अन्तर्गत भा0द0वि0 की धारा-302 में मा0 अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश-12, जनपद वाराणसी के आदेश दिनांक 23-08-2002 को आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया। बन्दी द्वारा दिनांक 25.03.2017 तक 18 वर्ष 08 माह 05 दिन की अपरिहार तथा 21 वर्ष 09 माह 20 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। बन्दी का जेल में आचरण अच्छा है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट, वाराणसी ने बन्दी की समयपूर्व मुक्ति की संस्तुति की है। प्रोबेशन बोर्ड ने अंकित किया है कि बन्दी ने आपसी विवाद में दिनांक 19.07.1978 को सुबह अपनी पत्नी आशमा बेगम, पुत्र यासीन व सईद सहित 03 लोगों की चाकू मारकर करने का जघन्य अपराध कारित किया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत सन्देश जायेगा। जेल रिपोर्ट के अनुसार बन्दी के स्वास्थ्य की दशा सन्तोषजनक है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गंभीरता, जघन्यता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी हकीम रईस अली पुत्र मो0 मीरन, निवासी जनपद-लखनऊ को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है।

http://shasanadesh.up.nic.in

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अतः इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।
2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

3- उपर्युक्त वर्णित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि बन्दी हकीम रईस अली (बन्दी संख्या-41957) पुत्र मो0 मीरन, निवासी जनपद-लखनऊ के फार्म-ए पर यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के प्राविधानों के अन्तर्गत सम्यक् विचारोपरान्त उसे मुक्ति का पात्र नहीं पाया गया है। अतएव उक्त बन्दी की लाइसेन्स पर मुक्ति शासन द्वारा अस्वीकार कर दी गयी है। तदनुसार उसके फार्म-ए पर शासन के आदेश अंकित करके एतदद्वारा वापस लौटाया जा रहा है। कृपया प्राप्ति स्वीकार करते हुए शासन के निर्णय से बन्दी को तत्काल अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्नक: यथोपरि।

(बन्दी का फार्म-ए एवं समस्त पत्रादि सहित)

भवदीय,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

संख्या-734/2017/1313(1)/22-2-2017 तद्दिनांक

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1- जिला मजिस्ट्रेट, जनपद-वाराणसी।

2- वरिष्ठ अधीक्षक, केन्द्रीय कारागार, वाराणसी।

3- निजी सचिव, मा0 राज्यमंत्री, कारागार विभाग को मा0 मंत्री जी के सूचनार्थ।

4- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

http://shasanadesh.up.nic.in

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।
2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

शासनादेश सख्ंया-734/2017/1313@22-2-2017-17(439)/2017

दिनांक 30 अगस्त, 2017 का संलग्नक

<u>सरकार के आदेश</u>

केन्द्रीय कारागार, वाराणसी में निरूद्ध बन्दी हकीम रईस अली (बन्दी संख्या-41957) पुत्र मो0 मीरन, ग्राम व थाना-कैसरबाग, जनपद-लखनऊ का निवासी है। बन्दी ने आपसी विवाद में दिनांक 19.07.1978 को सुबह लगभग 07.00 बजे पत्नी आशमा बेगम, पुत्र यासीन व सईद सहित 03 लोगों की चाकू मारकर हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-983/1998 के अन्तर्गत भा0द0वि0 की धारा-302 में मा0 अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश-12, जनपद वाराणसी के आदेश दिनांक 23-08-2002 को आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया। बन्दी द्वारा दिनांक 25.03.2017 तक 18 वर्ष 08 माह 05 दिन की अपरिहार तथा 21 वर्ष 09 माह 20 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। बन्दी का जेल में आचरण अच्छा है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट, वाराणसी ने बन्दी की समयपूर्व मुक्ति की संस्तुति की है। प्रोबेशन बोर्ड ने अंकित किया है कि बन्दी ने आपसी विवाद में दिनांक 19.07.1978 को सुबह अपनी पत्नी आशमा बेगम, पुत्र यासीन व सईद सहित 03 लोगों की चाकू मारकर करने का जघन्य अपराध कारित किया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत सन्देश जायेगा। जेल रिपोर्ट के अनुसार बन्दी के स्वास्थ्य की दशा सन्तोषजनक है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गंभीरता, जघन्यता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी हकीम रईस अली पुत्र मो0 मीरन, निवासी जनपद-लखनऊ को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है। उक्त के दृष्टिगत सम्यक विचारोपरान्त शासन द्वारा बन्दी की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई **अस्वीकार** किये जाने का निर्णय लिया गया है।

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

http://shasanadesh.up.nic.in

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अतः इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।
2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।